Hindi language poets

Abdul Rahim Khan-I-Khana (1556–1627), composer, poet, and produced books on Astrology

Ambarish Srivastava (born 1965), architect and poet

Amir Khusrow, (1253–1325) musician, scholar and poet

Ashok Chakradhar (born 1951), author and poet

Atal Bihari Vajpai (born 1924), author, poet and speaker

Atul Kumar (born 29 August 1995), Hindi author and poet (Digitalization...For the prosperous nation)

Bharatendu Harishchandra (1850–1885), novelist, poet, playwright

Bhawani Prasad Mishra (1913–1985), poet and author

Dharmveer Bharti (1926–1997), poet, author, playwright and a social thinker

Geet Chaturvedi (born 1977), poet, short story author and journalist

Gopal Singh Nepali (1911–1963), poet of Hindi literature and lyricist of Bollywood

Gopal Prasad Vyas (1915-2005), poet, known for his humorous poems

Gopaldas Neeraj (born 1924), poet and author

Gulab Khandelwal (born 1924), poetry including some in Urdu and English

Gulzar (1934-), poet, lyricist, film director

Harivansh Rai Bachchan (1907–2003), poet of Chhayavaad literary movement (romantic upsurge)

Hemant Shesh (born 1952), writer, poet and civil servant

Rambhadracharya (born 1950), religious leader and educationist.

Jagdish Gupt (1924–2001), Chhayavaad literary movement poet

Jaishankar Prasad (1889–1937), novelist, playwright, poet

Javed Akhtar (born 1945), poet, lyricist and scriptwriter

Jwalamukhi (1938–2008), poet, novelist, writer and political activist

Kabir (1440–1518), mystic poet and saint of India

Kaka Hathrasi (1906–1995), satirist and humorist poet

Kedarnath Agarwal (1911–2000), Hindi language poet and littérateur

Kedarnath Singh (born 1934), poet, critic and essayist

Krishan Kumar Sharma "Rasik" (born 1983), Hindi, Punjabi, English and Urdu poet and writer

Kumar Vishwas (born 1970), poet and professor

Kunwar Bechain (born 1942), Professor and Poet

Kunwar Narayan (born 1927), poet

Mahadevi Varma (1906–1987), poet, freedom fighter, woman's activist and educationist

Maithili Sharan Gupt (1886–1964), poet, politician, dramatist, translator

Makhanlal Chaturvedi (1889–1968), Indian poet, writer, essayist, playwright and a journalist

Meera (1498–1547), mystic singer and composer of Bhajans

Mohan Rana (born 1964), poet

Murari Lal Sharma Neeras (born 1936), poet and educator

Nagarjun (1911–1998), poet, writer, essayist, novelist

Narottam Das,(AD 1550-1605) the writer of 'Sudama Charitra' and was contemporary of Tulsidas.

Sourse- wikipedia

ISSN 2349 - 7521
RNI No. MPHIN/2004/14249

मासिक

अक्षर वार्ता

Email: aksharwartajournal@gmail.com

वर्ष-13 अंक-12, सितंबर 2017
Vol - XIII Issue No - XII SEPTEMBER 2017

प्रधान संपादक - प्रो.शैलेन्द्रकुमार शर्मा
shailendrasharma1966@gmail.com
संपादक- डॉ.मोहन बैरागी
drmohan128@gmail.com
संपादक मण्डल- डॉ.जगदीशचन्द्र शर्मा (उज्जैन),
प्रो.राजश्री शर्मा (उज्जैन)
सहयोगी सम्पादक- डॉ.मोहसिन खान (महाराष्ट्र),
सह सम्पादक- डॉ.भेरुलाल मालवीय,
डॉ.पराक्रम सिंह, रूपाली सारये
प्रबंध संपादक- कृष्णदास बैरागी,ज्योति बैरागी

शोध-पत्र भेजने संबंधी नियम

शोध-पत्र 2500-5000 शब्दों से अधिक नही होना चाहिये। o. हिन्दी माध्यम के शोध पत्रों को कृतिदेव 010 (Kruti Dev 010) या युनिकोड मंगल फोंट में टाईप करवाकर माईक्रोसॉफ्ट वर्ड में भेजें। o. अंग्रेजी माध्यम के शोध-पत्र टाईम्स न्यु रोमन (Times New Roman) ,एरियल फोंट (Arial) में टाईप करवाकर माईक्रोसॉफ्ट वर्ड में भेजें। शोध-पत्र की सॉफ्टकॉपी अक्षरवार्ता के ईमेल पर भेजने के बाद हार्ड कॉपी तथा शोध-पत्र मौलिक होने के घोषणा-पत्र के साथ हस्ताक्षर कर अक्षरवार्ता के कार्यालय को प्रेषित करें। o. Please Follow- APA/MLA Style for formatting अक्षरवार्ता का वार्षिक सदस्यता शुल्क रूपये 650/- छः सौ पचास रूपये एवं पंजीयन शुल्क रूपये एक हजार पांच सौ का भुगतान बैंक द्वारा सीधे ट्रांसफर या जमा किया जा सकता है। बैंक विवरण निम्नानुसार है- बैंक :-

Corporation Bank,
AccountHolder- Aksharwarta
Current Accont NO. 510101003522430
IFSC- CORP0000762,
Branch- Rishi Nagar,Ujjain,MP,India

भुगतान की मुल रसीद,शोध-पत्र एव सीडी के साथ कार्यालय के पते पर भेजना अनिवार्य है।

संपादकीय कार्यालय का पता- संपादक अक्षर वार्ता
43,क्षीर सागर,द्रविड मार्ग,उज्जैन,मप्र. 456006,भारत,
फोन :- 0734-2550150 मोबा :-8989547427

INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

-अनुक्रम-

» लोक कलाकार मांगणयार
डॉ. महीपाल सिंह राठौड़ 05
» यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र की कहानियों में आर्थिक समस्या एक अनुशीलन (विशेष संदर्भ - बन्दूक वाली मौसी कहानी-संग्रह)
सतीश कुमार 08
» विवाह के प्रकार,अवस्था एवं कालनिर्णय- ज्योतिषीय दृष्टि
डॉ. रश्मि मिश्रा 10
» "मनोवैज्ञानिक पक्ष में संचार की अनिवार्यता"
डॉ. दीपमाला गुप्ता 12
» "नैतिक मूल्य और जीवन शैली"
श्रीमती मीना परस्ते 16
» 'मालवी लोकसाहित्य में नारी संवेदना'
रूपाली सारये 18
» यशपाल के उपन्यासों में सामाजिक और प्रगतिवादी वर्ग चेतना
कला मौर्य 23
» हिंदी भाषा शिक्षण में नवाचार
डॉ. नवीन नन्दवाना 26
» मॉरीशसीय रचनाकारः रामदेव धुरंधर 'पथरीला सोना' (छह खंडीय) उपन्यास में भोजपुरी का प्रभाव
डॉ. अलका धनपत 30
» वैश्विक परिप्रेक्ष्य में समकालीन नवगीतः चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ
डॉ. भेरूलाल मालवीय 34
» नवगीत यात्रा में राजेन्द्रप्रसाद सिंह का योगदान
मेघा गुप्ता 36
» शिक्षा का आर्थिक विकास में योगदान का अध्ययन मप्र. में पूर्व निमाड़ खण्डवा एवं बुरहानपुर जिले के विशेष संदर्भ में
राकेश कुमार दिलावरे, डॉ. उषा कुमठ 38
» वृहत्त्रयी में वैदिक चिन्तन के तत्त्व
गुंजन विजयवर्गीय 42
» पुस्तक समीक्षा
हिंदी के वैश्विक संदर्भः अधुनातन संदर्भ पुस्तक
सुमन कुमार 45
» EPISTLES OF LOVE
Milica Ljubinko Jeliæ
Translation:-
Bojan Beliæ 47

हिंदी भाषा शिक्षण में नवाचार

डॉ. नवीन नन्दवाना

सहायक आचार्य, हिंदी विभाग- मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,उदयपुर,राजस्थान

हिंदी का हिंदुस्तान से ठीक वैसा ही गहरा नाता है जैसा कि फूल का सुगंध से, अग्नि का तपन से, तारों का प्रकाश और शीतलता से। जैसे सुगंध के बिना फूलों का, जलनताप के बिना अग्नि का और प्रकाश व शीतलता के बिना तारों की चमक व उपस्थिति उतनी खुशद नहीं हो सकती, ठीक वैसे ही हिंदी के बिना हम हिंदुस्तान की कल्पना नहीं कर सकते। आज संपूर्ण देश में शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र होगा जहाँ हिंदी पढ़ी, लिखी या बोली न जाती हो।

आज हम 21वीं सदी में जी रहे हैं। यह दौर सूचना और प्रौद्योगिकी का दौर है, जहाँ आज हम किसी भी कार्य को असंभव नही मान सकते हैं। नित नूतन तकनीकी विकास और नए-नए एंप्स का चलन हमारे जन-जीवन को आसान बना रहा है। ऐसे में यदि आज तक भारत के किसी कौने में रह रहे व्यक्ति ने यदि हिंदी न भी सीखी हो तो भी अब उसके लिए हिंदी सीखना दुष्कर नहीं होगा। आज संपूर्ण देश के प्रत्येक भाग के वासियों के लिए हिंदी सीखना व अध्ययन-अध्यापन का कार्य बहुत ही आसान हो चुका है। इस देश की विराट संस्कृति व सभ्यता अनादि काल से ही एक-दूसरे को आपस में घनिष्ठता से जोड़े हुए हैं। अतः ''यह देश प्राचीन काल से ही एक से चिंतन से अनुप्राणित होता रहा है। अपने समय में संस्कृत पूरे देश में भाषा थी। केरल में पैदा हुए आदि शंकराचार्य ने संस्कृत के माध्यम से ही पूरे भारत में अपने अद्वैत सिद्धांत की पताका फहराई थी। बाद में दक्षिण भारत में जिस भक्ति आंदोलन की शुरुआत हुई थी, उसने पूरे उत्तर, पश्चिम तथा पूर्वी भारत को आप्लावित किया था। अकबर ने पहली बार प्रशासनिक व्यवस्था की दृष्टि से जो 'दक्खिन देश' बनाया था, वहाँ की भाषा को तो 'दक्खिनी हिंदी' ही कहा गया। दक्षिण में तमिल के महाकवि तिरूवल्लूर तथा उत्तर के वैदिक ग्रंथों से लेकर आज तक का सारा भारतीय साहित्य और चिंतन निरंतर एक से ही अनुभव और चेतना से स्पंदित रहा है। इस सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले लोगों के लिए एक-दूसरे की भाषा सीखने में आसानी होती है। इसलिए सबसे पहले हमें यह मानसिकता बनानी होगी कि हिंदी सीखना कठिन नहीं है। फिर संचार माध्यमों (दूरदर्शन, रेडियो, फिल्म अदि) के द्वारा हिंदी भाषा निरंतर किसी-न-किसी रूप में देश के लोगों तक पहुँच रही है। इससे भी भाषा सीखने को प्रोत्साहन मिलता है, तथा मदद मिलती है।'' ऐसे में यदि हम मानसिक रूप से यदि हिंदी को स्वीकार करने के लिए तैयार हो जाएँ तो प्रथम व द्वितीय भाषा के साथ-साथ विदेशों में (विदेशी भाषा के रूप में) भी हिंदी अध्ययन-अध्यापन का कार्य आसान हो जाएगा। और दूसरी कठिनाईयाँ तो प्रौद्योगिक क्रांति का यह समय अपने-आप दूर कर लेगा।

जिस दौर में भारत में गुरुकुल पद्धति से किसी वट या पीपल की छाया में आश्रम में शिक्षण होता था, उस समय भी हमारा देश विश्व गुरु की संज्ञा से विभूषित था। ज्ञान की अथाह गंगा के लिए संपूर्ण विश्व के समक्ष हमारा ही देश गंगोत्री सिद्ध हुआ। कई देशों के विद्यार्थी और यात्री यहाँ ज्ञानार्जन के लिए आया करते थे। आज तो परिस्थितियाँ बिल्कुल बदल चुकी है। आज का समय सूचना, संचार और प्रौद्योगिकी का समय है। भाषा ने अपना अप्रतिम परिष्कार किया है। शिक्षण के भी कई नए आयाम उभर कर आए है। ऐसे में हिंदी शिक्षण को उस प्रौद्योगिकी के साथ जोड़ना अत्यावश्यक हो जाता है। आज इतने संसाधनों की उपलब्धता के होने के बावजूद हिंदी भाषा-साहित्य-शिक्षण को लेकर चिंताएँ बनी रहती है तो इस बात पर विचार-मंथन करना जरूरी हो जाता है कि क्या हमारी शिक्षण पद्धति समसामयिक है या नहीं ? क्या हमारा हिंदी शिक्षक उन नव-इलेक्ट्रॉनिक व ई-माध्यमों के साथ बेहतर संयोजन स्थापित कर पा रहा है ?

सूचना और प्रौद्योगिकी के इस दौर में जब सब चीजे डिजीटल से जुड़ रही हो, ऐसे में हिंदी शिक्षक व शिक्षण दोनो का उससे तालमेल बिठाना अनिवार्य हो जाता है। आज हमारी सरकारे ने न केवल विश्वविद्यालयों व महाविद्यालयों को बल्कि विद्यालयो को भी प्रौद्योगिकी की दृष्टि से सम्पन्न बनाया है। वहाँ उपयुक्त ई-ससाधन उपलब्ध करवाये है किंतु हमारी इच्छा-शक्ति की कमी के कारण हम उन संसाधनों का बेहतर उपयोग नहीं कर पा रहे है और वे समस्त सुविधाएँ व ज्ञान के भंडार डिब्बे में बंद है व हमारी विद्यार्थी पीढ़ी उनके उपयोग करने से वंचित हो रही है। ऐसे में उन संसाधनों की समुचित उपलब्धता, उपयोग, रख-रखाव का कार्य जरूरी हो जाता है।

हिंदी भाषा शिक्षण में हम वैकल्पिक व नवमीडिया का उपयोग कर हमारी शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी बना सकते है, साथ ही इन माध्यमों से कराया गया शिक्षण विद्यार्थियों के लिए रुचिपूर्ण होगा और इनके माध्यम से प्राप्त ज्ञान उनके मन-मस्तिष्क में अधिक स्थायी हो सकेगा। आज रेडियो, टेलीविजन, कम्प्यूटर, इंटरनेट आदि कई संसाधन हमारे पास उपलब्ध है, जिनके सहयोग से हम ज्ञान की

अविरत धारा को अधिक वेग के साथ प्रवाहित कर कक्षा-शिक्षण को प्रभावी बना सकते है। आकाशवाणी की प्रसार क्षमता व केंद्रो की संख्या विगत कुछ वर्षों में बढ़ी है। उन पर प्रसारित होने वाले हिंदी साहित्य व शिक्षण संबंधी कार्यक्रमो, रचनाकारों के साक्षात्कार, सृजनात्मक साहित्य यथा- गीत, कविता, कहानी, विचार लेख, एकांकी आदि को समय-समय पर हमें विद्यार्थियो को सुनाना चाहिए। जिससे कि उनमें विषय के प्रति रुचि व अधिगम के प्रति तन्मयता उत्पन्न हो सके। आज जब देश के प्रधानमंत्री स्वयं रेडियो पर अपने कार्यक्रम 'मन की बात' के माध्यम से समय-समय पर देश के बच्चो से बातचीत कर रहे है, ऐसे में हिंदी शिक्षण करने वाले शिक्षक का दायित्व बन जाता है कि वह आकाशवाणी पर प्रसारित हो रहे विषय संबंधी कार्यक्रमो से विद्यार्थियो को लाभान्वित करे।

टेलीविजन भी अपने-आप में संचार, सूचना व प्रौद्योगिकी का एक सशक्त माध्यम है। सामान्यतः आज के विद्यार्थी वर्ग (चाहे वह गाँव का हो या शहर का) की टेलीविजन कार्यक्रमो विशेष रुचि होती है। अतः हमे श्रव्य-दृश्य इस प्रौद्योगिकी माध्यम का उपयोग अपने शिक्षण को बेहतर, रुचिपूर्ण व स्थायी बनाने के लिए करना चाहिए। हमारी आज की शिक्षा व शिक्षण कार्य को बेहतर बनाने के लिए प्रयासरत नियामक संस्थाओ को हिंदी भाषा, साहित्य एवं व्याकरण शिक्षण से जुड़े पाठ तैयार करवाने चाहिए और उनकी पहुँच सुदूर ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियो तक हो सके, इस बात को भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए। आज कई निजी दूरदर्शन सर्विस प्रोवाइडर कंपनियों (यथा- टाटा स्काई आदि) ने ऐसे पाठ तैयार किए है जो कि विशेष पैकेज लेने पर देखे जा सकते है। किंतु उनकी उपलब्धता व उपयोग केवल उन परिवारों के बच्चो तक ही हो पा रहा है जिनके अभिभावक उन चैनल्स के लिए पैसा अदा करने की स्थिति में है। गाँव के सरकारी स्कूल का बालक आज भी इस प्रकार की सुविधाओ से वंचित है, कारण भले ही संसाधनों की अनुपलब्धता हो या उपलब्ध संसाधनों का अनुपयोग।

कम्प्यूटर ने मानव-जीवन की दिशा ही बदल दी है। आज कम्प्यूटर का विकास श्रेष्ठता के इस शिखर तक हो चुका है कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में यथा- शिक्षा, संचार, यातायात, चिकित्सा, पर्यटन आदि में यह लाभकारी सिद्ध हो रहा है। आज शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र होगा जिसमें कम्प्यूटर का हस्तक्षेप न हो। की-बोर्ड, माउस, डेस्कटॉप-पॉमटॉप, जॉयस्टिक, स्कैनर, वेबकैम, टचस्क्रीन और बारकोड-रीडर ने बाजार के साथ-साथ अध्ययन-अध्यापन की दुनिया को भी बदल डाला है।

कम्प्यूटर में यूनिकोड का प्रयोग हिंदी के लिए वरदान सिद्ध हुआ है। हिंदी-फोंट के परिवर्तन की समस्या को इसने हल कर दिया है। पहले हिंदी की लिखित सामग्री (वर्ड फाइल) को एक से दूसरे कम्प्यूटर पर ले जाने पर फोंट परिवर्तित हो जाने की समस्या का सामना करना पड़ता था। यूनिकोड ने अब इससे मुक्ति दिला दी है। इससे कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य करने की क्रियाविधि आसान हुई है। ट्रांसलिटरेशन के जरिये हिंदी टाइप का ज्ञान न रखने वाला शिक्षक भी अब कम्प्यूटर पर अपना शिक्षण पाठ तैयार करने में सक्षम हुआ है। गूगल ने अब लगभग 24 भाषाओं में यह कार्य उपलब्ध करवा कर कम्प्यूटर पर हिंदी के साथ-साथ अन्य भारतीय व विदेशी भाषाओं के प्रयोग का आसान बनाया है।

इस कार्य ने आज सभी सीमाओं को तोड़ दिया है किंतु फिर भी इसकी अपनी कुछ सीमाएँ हैं, जिन पर कार्य किया जाना चाहिए। पुस्तक प्रकाशन के क्षेत्र में अभी तक यूनिकोड का प्रयोग चलन में नहीं आया है। प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अभी तक यह भी सीमा है कि हिंदी में कम्प्यूटर कार्य करते समय स्पेल चैकर व ग्रामर चैकर जैसी सुविधाएँ अभी तक न होना कठिनाई सिद्ध हो रही है। इंटरनेट की दुनिया में प्रयुक्त फोंट (यूनिकोड) व प्रकाशन की दुनिया के फोंट (चाणक्य आदि) की भिन्नता भी हिंदी अध्ययन-अध्यापन व प्रकाशन के साथ-साथ ई-बुक्स व इंटरनेट पर हिंदी में सामग्री उपलब्धता में कठिनाईपद सिद्ध हो रही है।

कम्प्यूटर व इंटरनेट की दुनिया ने हिंदी को अब केवल कक्षा-शिक्षण तक ही सीमित न रखकर वैश्विक स्वरूप प्रदान किया है। आज हिंदी अध्ययन-अध्यापन का कार्य न केवल भारत-भूमि पर बल्कि विदेशों में भी हो रहा है। ''आज विश्व के 150 विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षा की व्यवस्था है। अमेरिका में 113 विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में हिंदी अध्ययन की सुविधाएँ उपलब्ध है, जिनमें 13 शोध-स्तर के केंद्र बने हुए है। जर्मनी के 10, इटली के 07, फ्रांस के 05, इंग्लैण्ड-हालैंड व हंगरी में 03, बेल्जियम के 02, बुल्गेरिया, ऑस्ट्रिया, रोमानिया, यूगोस्लाविया, नार्वे, फिनलैंड के राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों में उच्च स्तर पर हिंदी भाषा का अध्ययन हो रहा है। पड़ोसी देशों में चीन, जापान, पाकिस्तान, श्रीलंका, नेपाल, तुर्की और कोरिया के राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा और साहित्य का अध्यापन हो रहा है।'' इतनी समृद्धि के बावजूद भी भारत में हिंदी व हिंदी शिक्षण में प्रौद्योगिकी के प्रयोग को बढ़ाने की अनेक संभावनाएँ है।

विद्यालयों में हिंदी शिक्षण आज भी मात्र आदर्श वाचन व अनुकरण वाचन के सहारे ही हो रहा है। अब 21वीं सदी में उसे तकनीकी से जोड़ने की आवश्यकता है। अतः हिंदी शिक्षक के लिए तकनीकी प्रशिक्षण को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। आज प्रत्येक राज्य में उच्च शिक्षा व विद्यालयी शिक्षा में कार्यरत शिक्षकों के लिए विषय आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम तो होते है और उनमें भी मात्र परम्परा-पालन होता है या परम्परागत तरीकों को ही अपनाया जाता है। कई बार तो संदर्भ व्यक्तियो को भी पूरा तकनीकी ज्ञान नहीं होता है और मात्र व्याख्यान के सहारे ही पूरा प्रशिक्षण पूर्ण हो जाता है। अब इस दौर में प्रौद्योगिकी ज्ञान को शिक्षकों तक पहुँचाने के प्रयास किए जाने चाहिए। शिक्षकों के लिए अनिवार्यतः हिंदी शिक्षण में तकनीकी प्रयोग आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित होने चाहिए।

स्कूलों तक सरकारों ने इंटरनेट की उपलब्धता करवा दी है किंतु चिंता का विषय है कि हिंदी शिक्षक द्वारा इसका प्रभावी शिक्षण हेतु प्रयोग नहीं किया जा रहा है। 'पावर पोइंट प्रजेंटेशन' के माध्यम से हिंदी शिक्षण को प्रभावी बनाए जाने की आवश्यकता है। हिंदी भाषा शिक्षण के लिए अब 'ई-पाठ' भी तैयार किए जा रहे है। विषय-विशेषज्ञों को

इस कार्य में सहायता लेकर उनके अनुभव व ज्ञान को देशभर की हिंदी कक्षाओं तक पहुँचाया जा सकता है। उच्च शिक्षा में 'ई-पी.जी. पाठशाला' कार्यक्रम के तहत पाठ लेखन का कार्य जारी है। ऐसा विद्यालयी शिक्षा के लिए भी किया जाना चाहिए। देश के कुछ विश्वविद्यालयों विशेषतः दूरस्थ विश्वविद्यालयों यथा- वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा (राजस्थान) ने अपनी वेबसाइट पर 'यू-ट्यूब' के माध्यम से कई वीडियो व्याख्यान अपलोड कर रखे हैं जिनका उपयोग भी हिंदी शिक्षक द्वारा हिंदी शिक्षण कार्य में किया जा सकता है। और इस कार्य से प्रेरणा लेकर अन्य विश्वविद्यालय भी इस दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।''संचार व प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा हिंदी सॉफ्टवेयर उपकरण लोकार्पित किया गया। जिसमें हिंदी के कई सॉफ्टवेयर उपकरण निःशुल्क रूप से उपलब्ध हैं। इसमें हिंदी भाषा का यूनिकोड आधारित की-बोर्ड ड्राइवर, ऑपन टाइप फेन्ट्स, हिंदी के लिए सभी प्रकार के फोन्ट्स कोड एवं स्टोरेज का परिवर्तक भारतीय ऑपन ऑप्टिक्स (open source) का हिंदी भाषा संस्करण, हिंदी में फायर फॉक्स ब्राउजर, हिंदी. ओ.सी.आर., हिंदी के लिए एकीकृत शब्द संसाधक, अंग्रेजी-हिंदी-संसाधक, अंग्रेजी-हिंदी शब्दकोश, हिंदी भाषा के वर्तनी जाँचकर्ता, हिंदी भाषा का शब्दानुवाद टूल तथा हिंदी के लिए टेक्स्ट-टू स्पीच आदि उपलब्ध हैं।''[5] किंतु चिंता का विषय है कि उपलब्ध ज्ञान व प्रौद्योगिकी संसाधनों का उपयोग हम पूरी तरह से नहीं कर पा रहे हैं।

आज प्रौद्योगिकी की श्रेष्ठता ने अनुवाद के कार्य को बहुत आसान बनाया है। गूगल ट्रांसलेट की सुविधा का उपयोग कर हम लगभग 104 भारतीय व विदेशी भाषाओं में अनुवाद का कार्य कर सकते हैं। सी. डेक. ने मंत्रा नामक सॉफ्टवेयर बनाया है, यह मशीनी अनुवाद प्रणाली है जिसके माध्यम से प्रशासन में प्रयुक्त होने वाली सामग्री का अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद करना संभव हुआ है। इसी सी.डेक पुणे ने 'वाक् से पाठ' (स्पीच टू टेक्स्ट) सॉफ्टवेयर को विकसित किया है। जिसके द्वारा हिंदी अध्यापक अपने पाठ को टेक्स्ट रूप में कम्प्यूटर पर डालकर अध्यापन को रुचिपूर्ण बना सकता है। 'वाक् से पाठ' (स्पीच टू टेक्स्ट) की सुविधा अब हमारे मोबाइल पर भी उपलब्ध है। साथ ही गूगल ट्रांसलेट अब टेक्स्ट फोटो इमेज के रूप में उपलब्ध सामग्री का भी ट्रांसलेट अपनी इच्छित भाषा के रूप में उपलब्ध करवा रहा है। स्कैन किए हुए पाठों को भी अब संपादित करना आसान हुआ है। इमेजिस सॉफ्टवेयर प्राइवेट लिमिटेड, हैदराबाद ने 'ऑप्टीकल केरेक्टर रिकिग्निशन' (ओ.सी.आर.) का विकास कर इस कार्य को आसान बनाया है। हिंदी भाषा की शक्ति उसके त्याग व ग्रहण में है। उसमें नित नए शब्दों की स्वीकृति हो रही है। हिंदी अध्यापक को आज नितप्रति कई प्रकार के शब्दों का अर्थ देखना होता है। अतः बेहतर शब्दकोशों की उपलब्धता उसके शिक्षण को रुचिपूर्ण व सुगम बना सकती है। इस दिशा में भी काफी तकनीकी विकास हुआ है।''प्रत्येक प्रकार के शब्दकोश उपलब्ध हैं। हिंदी शब्द तंत्र, शब्दमाला डिक्शनरी, ई-महाशब्दकोश, वर्धा शब्दकोश के अलावा हिंदी विश्वकोश, हिंदी यूनिकोड पाठ संग्रह, अरविंद समान्तर कोश आदि हैं। प्रबोध महाशब्दकोश के बाद नया महाशब्दकोश विकसित करने का काम प्रगति पथ पर है। केंद्रीय हिंदी संस्थान ने भी श्री अरविंद और उनकी पत्नी श्रीमती कुसुम कुमार से 'संस्थान अरविंद लेक्सीकॉन' बनवाया है। जिसमें 9 लाख से अधिक अभिव्यक्तियाँ हैं।''[6] ई-महाशब्दकोश एक द्विभाषी व द्विआयामी, अंग्रेजी उच्चारण सहित शब्दकोश है। इसे http.//www.rajbhasha.gov.in से एक्सेस कर सकते हैं।

अहिंदी क्षेत्रों में हिंदी शिक्षण को प्रभावी व रुचिपूर्ण बनाने के क्षेत्र में भी प्रौद्योगिकी विकास हुआ है। ऐसे विभिन्न सॉफ्टवेयर बन चुके हैं जिनके माध्यम से अहिंदी भाषी क्षेत्रों में देवनागरी लिपि में अक्षर ज्ञान, उनके उच्चारण व व्याकरण आदि की जानकारी दी जा सकती है। केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली, राजभाषा विभाग, भारत सरकार, महात्मा गाँधी अन्तरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय वर्धा की वेबसाइट्स पर भी कई तरह के टूल्स व जानकारियाँ उपलब्ध है जिससे इस कार्य को आसान बनाया जा सकता है।

तकनीकी शब्दावली आयोग ने भी लगभग दस हजार पारिभाषिक शब्दों की शब्दावली C.D.net पर उपलब्ध कराई है। केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा और भारतीय इलेक्ट्रॉनिक्स अनुसंधान विकास केंद्र, नोएड़ा द्वारा नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा प्रकाशित हिंदी विश्वकोश को इंटरनेट पर उपलब्ध कराया जा रहा है।

ब्लॉग लेखन ने हिंदी को व्यापक प्रचार-प्रसार दिया है। ''देखते ही देखते ब्लॉगिंग समुदाय की बदौलत हिंदी में विविधताओं से भरी सामग्री की धारा बह निकली है जो बहुत सजीव, जीवंत और हिंदी की विशुद्ध खुशबू लिए हुए है।''[7] आज हिंदी में कई ब्लॉग चर्चित हैं। जिनके माध्यम से हिंदी शिक्षक अपनी शिक्षण सामग्री जुटा सकता है और देशभर व विश्वभर में साहित्य व भाषा को लेकर क्या चल रहा है, उससे अपडेट भी रह सकता है।

अब ऐसे सॉफ्टवेयर भी विकसित हो चुके हैं, जिनके माध्यम से बिना इंटरनेट के भी अनुवाद का कार्य किया जा सकता है। इसे सी.डेक मंत्रा ने राजभाषा स्टेंडअलोन नाम से बनाया है। इसे http://www.rajbhasha.gov.in से डाउनलोड किया जा सकता है। 'लीला हिंदी प्रबोध प्रवीण प्राज्ञ' का उपयोग उन गैर हिंदी भाषियों के लिए लाभकारी सिद्ध होता है जो प्रारंभ से ही उन्नत स्तर की हिंदी सीखना चाहते हैं। वर्तमान में 'लीला' के माध्यम से विभिन्न भारतीय भाषाओं यथा- बोडो, कन्नड़, गुजराती, मणिपुरी, मराठी, कश्मीरी, मलयालम एवं विदेशी भाषा यथा- नेपाली व अंग्रेजी आदि के माध्यम से हिंदी सीखने के लिए विकसित किया गया है। जिन क्षेत्रों में प्रथम भाषा हिंदी के अतिरिक्त कुछ अन्य भाषा है, वहाँ द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए संस्थागत प्रयास भी जारी हैं। ''अखिल भारतीय स्तर पर हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए हिंदीतर प्रदेशों में हिंदी द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है। राज्यों

के हिंदी अध्यापकों को हिंदी भाषा में प्रशिक्षण देने के लिए केंद्रीय हिंदी संस्थान ने कई पाठ्यक्रम संचालित किए है। इसी प्रकार अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी शिक्षण के लिए विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षा-प्रशिक्षा कार्यक्रम भी केंद्रीय हिंदी संस्थान में संचालित किए जाते हैं। विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे है। फिजी, मॉरिशस, सूरिनाम, गुयाना, ट्रिनिनाड, टोबेगो जैसे देशों में भारतीय मूल के लोग स्वैच्छिक और धार्मिक संस्थाओं द्वारा हिंदी शिक्षण कर रहे है। भारत सरकार की विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार योजना के अतर्गत विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण सफलतापूर्वक किया जा रहा है।''[8]

आज इंटरनेट पर अथाह सामग्री विद्यमान है। शिक्षण कार्य के लिए ढेरों विकल्प उपलब्ध हैं। 'हिंदी समय डॉट कॉम' पर हिंदी की रचनाओं व रचनाकारों का अथाह ज्ञान उपलब्ध है। इसी तरह 'भारतकोश' हिंदी ज्ञान का महासागर है। यह हिंदी का समग्र ऑनलाइन ज्ञानकोश है। जिस पर प्रतिमाह लगभग 12 लाख विलक होते है और अगस्त 2015 तक के आँकड़ों के अनुसार उस समय तक देखे गए कुल पृष्ठों की संख्या 16 करोड़ है। इस प्रकार इंटरनेट साहित्य-कला-ज्ञान-विज्ञान का अथाह सागर है जिसमें जितना अवगाहन करें उसमें से उतना ही नया ज्ञान रूपी अमृत प्राप्त कर सकते है।

परिवर्तन की स्वीकार्यता ही किसी को दीर्घजीवी बनाती है। भाषा के संबंध में भी यह बात लागू होती है। पं. जवाहरलाल नेहरू का कथन है कि- ''किसी भाषा को ऐसी तंग कोठरी में बंद कर दिया जाए, जिसमें कोई दरवाजे व खिड़कियाँ न हो, और प्रगतिशील परिवर्तन आने की गुंजाइश न रहे तो उसमें निश्चितता और छटा भले ही हो सकती है, परंतु बदलते हुए वातावरण और जनसाधारण के साथ उसका संपर्क टूट जाने की संभावना रहती है। इसका अनिवार्य परिणाम यह होता है कि उसमें ओज नहीं रहता और एक तरह का बनावटीपन आ जाता है। यह किसी भी समय अच्छी बात न होगी, परंतु मौजूदा प्राणवान और तेजी से बदलने वाले युग में, जिसमें हमारे आसपास की लगभग सभी चीजें बदल रही हैं, तो बंद कमरे में भाषा मर जाएगी।''[9] अतः हमें समसामयिक परिवर्तनों को स्वीकारते करते हुए हिंदी अध्ययन-अध्यापन की दिशा बदलनी होगी। आज हिंदी का स्वरूप बदल रहा है। बाजार, विज्ञापन और रोजगार इससे जुड़ रहा है। अतः ऐसे में हिंदी शिक्षक को अपने अध्ययन-अध्यापन में भी समुचित बदलाव लाना होगा। समय की गति के साथ हम उसकी लय-गति-छंद को तभी अपना सकेंगे जब हम बदलाव के साथ हिंदी व हिंदी शिक्षण को जोड़ सकेंगे। आज के दौर में जब हर क्षेत्र में प्रौद्योगिकी का बोलबाला हो, ऐसे में हिंदी शिक्षण भी इससे अछूता नहीं रह सकता है। हिंदी शिक्षक को प्रौद्योगिकी से हाथ मिलाना होगा। ऐसा करने पर ही वह ज्ञान के अन्य अनुशासनों के समक्ष अपने को खड़ा रख पाएगा।

संदर्भ :-

1. विजय अग्रवालः अपनी हिंदी सुधारें, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, 2008, पृष्ठ 03
2. डॉ. सहदेव वर्षाराणी निवृत्ति, हिंदी भाषा का अन्तरराष्ट्रीय स्वरूप,मधुमती, सितम्बर, 2016, वर्ष-56, अंक-07, पृष्ठ 11
3. शेफाली चतुर्वेदीः हिंदी भाषा और प्रौद्योगिकीः विविध संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ, गवेषणा, प्र.सं. प्रो. नंदकिशोर पाडेय,जुलाई-दिसम्बर, 2015, अंक-105, पृष्ठ 76
4. महावीर सरन जैनः भाषा प्रौद्योगिकी एवं हिंदीः दशा और दिशा, साहित्य अमृत, संपादकः त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी, वर्ष-21, अंक-02, सितम्बर, 2015, पृष्ठ 38
5. बालेंदु दाधीचः हिंदी की विशुद्ध खुशबू, गगनांचल, प्र.सं. अशोक चक्रधर, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, नई दिल्ली, वर्ष-38, अंक-05, जुलाई-अक्टूबर, 2015, पृष्ठ 137
6. डॉ. कमलकिशोर गोयनका और अन्यः हिंदी भाषाः स्वरूप, शिक्षण, वैधिकता, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, 2015, पृष्ठ 84
7. डॉ. कैलाश चंद्र भाटियाः हिंदीः विकास और संभावनाएँ, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार,1996, पृष्ठ 108